Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

पंडित कुमार गंधर्व जी का भक्ति संगीत में योगदान

PANKAJ MEHRA[1] AND DR. SARITA PATHAK YAJURVEDI[2]
1 Research Scholar, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi
2 Bharti College, University of Delhi

***सार**: हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में पंडित कुमार गंधर्व जी का बहुमूल्य योगदान रहा है। असाधारण प्रतीभा वाले पं. कुमार गंधर्व बाल्यकाल में ही बिना किसी प्रशिक्षण के श्रवयमात्र से ही किसी भी दिग्गज गायक द्वारा गाये राग या बंदिश की विस्तार सहित समृति में संजोकर हुबहु, प्रस्तुत कर देते थे। उनके इस चमत्कार को देखकर एक प्रतिष्ठित संत ''श्री गुरुमठकल स्वामी' ने कहा- 'अरे, यह तो कोई गंधर्व गा रहा है, 'कुमार गंधर्व' है ये। तो' 1 और मात्र 7 वर्ष की आयु में ही आपको 'कुमार गंधर्व'' की उपाधि मिल गई और आपको कुमार गंधर्व के नाम से जाना जाने लगा। 12 वर्ष की आयु में पंडित कुमार गंधर्व जी ने ग्वालियर परम्परा के सुविख्यात संगीत शास्त्री प्रो. बी.आर देवधर से संगीत शिक्षा प्राप्त करना प्रारम्भ किया। कुमार जी की गायन शैली अपना एक निजी व्यक्तित्व रखती। वे किसी भी घराने में बंधकर नहीं चले उन्होंने विभिन्न घरानों के सारतत्व् लेकर, कई घरानों की गायकी को एक साँचे में ढ़ालकर एक रस बना लिया जिससे उन्होने विशिष्ट शैली का निर्माण किया। प्रचलित राग स्वरूपों की नवीनता के साथ प्रस्तुत करना हों या फिर निगुर्ण भजनों को शास्त्रीय रूप प्रदान करना हो, अपना सम्पूर्ण सृजन कार्य एक नई खुशबू व ताजगी से ओत-प्रोत है कुमार जी एक ओर जो रव्याल गायन में निपुण तो थे ही उसके साथ-साथ लोकसंगीत, टप्पा भजन इत्यादि में भी उतने ही सिद्धहस्त थे। कुमार जी ने लोकसंगीत की धुनों का प्रयोग करके एक नए ही प्रकार की भजन शैली का निर्माण किया। संत कबीर जी के लिखे भजन और पदों के साथ अपने संगीत का मिश्रण करके भजन गायकी को एक नया आयाम दिया।*

उद्देश्य: पंडित कुमार गंधर्व द्वारा रचित भजनों का अध्ययन करना।

शोध-विधि: सर्वेक्षण विधि एवं साक्षात्कार

***मुख्य शब्द**: पंडित कुमार गंधर्व, भक्ति संगीत, भजन गायन शैली*

पंडित कुमार गंधर्व: जीवन परिचय

भारतीय शास्त्रीय संगीत के सुप्रसिद्ध गायक ''पंडित कुमार गंधर्व'' जी का वास्तविक नाम ''शिव पुत्र सिद्धरामैया कोमकाली'' था। कुमार जी का जन्म कर्नाटक के बेलग्राम जिले के सुलेभावी गाँव में 8 अप्रैल 1924 को हुआ। आपकी सांगीतिक नैसर्गिक प्रतीभा बाल्यकाल से ही झलकती थी। आप लगभग 10 वर्ष की आयु से ही संगीत समारोहों में जाते थे और ऐसा चमत्कारी गायन करते थे कि उनके इस चमत्कार को देखकर एक प्रतिष्ठित संत ''श्री गुरुमठकल स्वामी'' ने कहा- ''ये तो कोई गंधर्व गा रहा है और तब से आपका नाम कुमार गंधर्व पड़ गया। बचपन में किसी का गायन अथवा रिकॉर्ड सुनकर हुबहू सुना देना आपके लिए एक सहज कार्य था। अपनी पाँच वर्ष की आयु में एक दिन कुमार जी सवाई गंधर्व के गायन जल से में गए। वहाँ से लौटकर जब वे घर आए तो सवाई गंधर्व द्वारा गाई गई बसंत राग की बंदिश की तानें और आलापों को ज्यों का त्यों नकल करने लगे, ये देखकर कुमार जी के पिताजी आश्चर्य चकित रह गए।

अभ्यास और प्रशिक्षण के अभाव के उपरान्त श्रवण मात्र से किसी भी शास्त्रीय संगीत के श्रेष्ठ कलाकारों की गायकी बंन्दिशें व राग विस्तार को याद रखना और बिना किसी परिवर्तन कियें प्रस्तुत करने की विलक्षण क्षमता मात्र अल्पवय पं. कुमार गंन्धर्व में देखने को मिली। 12 वर्ष की आयु में ही वे ग्वालियर घराने के सुविख्याति संगीतज्ञ ''प्रो. बी.आर. देवधर जी के पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए आ गए, देवधर जी ने सर्वप्रथम कुमार गंधर्व के बाल मन पर छाए हुए यश की भावना को निकाला और संगीत के सारे कायदों एवं नियमों को बारिकी से समझाया। शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने परम्परागत गायन शैलियों का अध्ययन, मनन व चिंतन किया और उसकी आत्मा कायम रखते हुए उसे अपने रूप में गढ़कर उसे नए प्रकार, नई संकल्पनाओं व प्रयोजनों से सजाकर स्वयं की असाधारण गायन शैली का विकास किया।

प्रो. देवधर जी की गायनशाला में स्वयं तो कुमार जी ज्ञान अर्जित किया करते ही थे। साथ ही अन्य शिष्यों को भी संगीत शिक्षा देते थे। इन्हीं विद्यार्थियों में से एक थीं- भानुमती जी। मानुमती मूलत: कराची की रहने वाली थी तथा माता-पिता के देहान्त के पश्चात् संगीत शिक्षा हेतु मुम्बई आ गई थी। 1947 में कुमार जी का विवाह भानुमती जी से सम्पन्न हुआ। कुमार जी का गायन संगीत जगत में अनंत ऊँचाईयों को छू रहा था। इसी दौरान एक ऐसी अनहोनी ने दस्तक दी जिसने कुमार के जीवन को एक नया ही मोड़ दे दिया। कुमार जी क्षय रोग से ग्रस्त है इस बात का पता चला। मुंबई में जब उनकी जांच हुई तो पता कि उनका बांयां फेफड़ा आकुंचित होकर बेकाम हो गया है।

व्यक्तित्व एवं विचार तथा गायन शैली

जिस प्रकार स्वयंभू शिल्प सुगठित होता है, स्थिर होता है, वैसा ही कुमार जी का बोलना, उनके विचार ठोस व दृढ़ होते थे। कुमार जी अपनी परम्पराओं और घरानों के प्रति अत्यन्त निष्ठावान थे। उन्होंने गहराई से घरानों को समझा और आत्मसात किया। घरानों के बन्धनों को वे अच्छे से जानते थे, वे कभी किसी घराने में बँधकर नहीं चले, विभिन्न घरानों की गायकी को एक सांचे में ढाँलकर एक विशिष्ट गायन शैली का निर्माण किया। कुमार जी का कहना था कि ''मैं घरानों की कुलीगीरी नहीं करता।'' घरानों के गहरे अभ्यास और कलात्मक सृजनशीलता के परिणामस्वरूप उनकी गायकी ने नया रूप किया। अपना कुछ नया करना है, और करके ही दिखाना है, यह सोचकर कुमार जी ने कभी कुछ नहीं किया सृजन तय करके नहीं होता, वे स्वयं कहते भी थे कि ''ये सब मुझसे बन गया है।'' कुमार जी अपने विद्यार्थियों को अधिकतर रूप से सक्षम बनाने पर जोर देते थे, कुमार जी का कहना था कि ''तुम अपना गाना गाओ, मेरी नकल मत करो।''

''यदि तुम्हें मेरा पहना कुर्ता पसन्द है और पहनना चाहते हो तो पहनों, लेकिन अपने नाप का बनवाओं।'' इस बात को ठीक से समझा जाना अतयन्त ज़रूरी है। कुमार जी का मानना था कि संगीत अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है, जिसमें सर्वाधिक संभावनाएँ हैं। उनका मानना था, जब तक कलाकार की दृष्टि विकसित नहीं होती, तब तक उसकी कला सृष्टि का व्यापक विस्तार नहीं हो सकता।

कुमार जी बताते हैं, ''बीमारी के बाद कुछ ख्याल देखकर निराशा हुई। राग तो सारे ही अच्छे थे। मेरा अभ्यास भी हुआ था, पर बहुत सारी बंदिशें फालतू थे। उन्हें कैसे गाएँ? इसलिए मैं बंदिश रचना के लिए उत्सुक हुआ।'' 'बंदिश' शब्द 'अच्छी बाँधी हुई चीज़' या किसी गायक की गायकी की चुस्त अंतर्गत पकड़ इन दोनों अर्थों में इस्तेमाल किया जाता है। यह पहला अर्थ अभिप्रेत है।

राग सिर्फ गाना नहीं है। उस बंदिश के माध्यम से सजाना है। गाता हुए मैं हाथों का जो उपयोग करता हूँ, वह बंदिश की डिमांड होती है। अपने गायन को कुमार जी जिस गार्भीय से लेते थे, उतना शायद ही किसी गायक ने लिया हो, महफिल की पूर्व तैयारी करते हुए बैठक में क्या-क्या गाना है? इसकी सूची बनाते थे। ''बंदिश में कितने आवर्तन कितने सैंकड के होंगे, ये मैं लिखकर रखता हूँ- कुमार जी कहते थे। कुमार जी ने अपने शरीर को इस प्रकार अनुशासित किया था कि एक बार किसी कार्यक्रम के दिन उनका गला सुबह से बैठा था और 'सा' लगाते ही खुल गया। कुमार जी आलाप से अधिक बोल आलाप पर निर्भर रहते थे, उन्होंने किसी राग स्वरूप में स्वीकृत मूल्यमानों से हटकर भी नये स्वरात्मक संबंध खोजने एवं रेखांकित करने का प्रयास किया है।

निगुर्ण भक्ति तथा कुमार जी

निगुर्ण से अभिप्राय है- ''जो गुणों की सीमा में बाँधा न जा सके इसका परिभाषिक अर्थ गुणातीत होता है। संसार में जो कुछ दृश्यमान है, उसका आदि स्रोत एक ही सत्य है। निगुर्ण-ब्रह्म का अर्थ है- उसमें जीव के हेय गुण, रागद्वेश नहीं है। निगुर्ण भक्ति में ईश्वर के रंग, रूप, गुण जाति नहीं होती, निगुर्ण भक्त मानते हैं कि ईश्वर का कोई आकार नहीं होता वह निराकार है।

पंडित कुमार गंधर्व जी का ख्याल, टप्पा, लोकसंगीत के अतिरिक्त भक्ति संगीत में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है, उन्होंने लोकधुनों के आधार पर शास्त्रीय संगीत का प्रयोग करके कई निगुर्ण तथा सगुण भजनों की स्वर रचना की। पं. सुरिंदर सिंह जी एक बार जब कुमार जी के घर गये। तब कुमार जी ने बताया ''बाल योगियों से भजन गायन की प्रेरणा उन्हें मिली। कुमार जी ने उन भजनों के साथ अपने संगीत का सम्मिश्रण करके भजन गायकी को एक नया आयाम दिया। निगुर्ण भजनों की अगर बात करें तो अधिकतर कबीर जी के, नाथ संम्प्रदाय के संत गुरु गोरखनाथ जी के भजनों को तो गाया ही, साथ ही सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास तुकाराम को भी गाया। निगुर्ण भजनों को संगीतबद्ध जिस प्रकार आपने किया और जिस प्रकार उसमें शून्यता की भावना से आपने गाया, वे अतुल्नीय है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

पंडित कुमार गंधर्व जी द्वारा रचित व संगीतबद्ध कुछ भजन व स्वर लिपियाँ

(उड़ जायेगा हँस अकेला)

स्थायी

उड़ जायेगा हँस अकेला
जग दर्शन का मेला

अन्तरा

जैसे पात गिरे तरुवर के, मिलना बहुत दुहेला
न जाने किधर गिरेगा, लगया पवन का रेला।।
जब होवे उमर पूरी, जब छूटेगा हुकुम मजबूत
यम के दूत बड़े मजबूत, यम से बड़ा झमेला
दास कबीर हर के गुण गावे, वा हर को परन पावे
गुरु की करनी गुरु जायेगा, चेले की करनी चेला।।

व्याख्या: संत कबीर जी द्वारा लिखे गये इस भजन में हँस की तुलना मानव आत्मा से की गई है, जो एक न एक दिन सभी सांसारिक सुखों को छोड़कर अपने अंतिम गंतव्य तक उड़ जाएगी, कबीर जी ने संसार को दर्शन का मेला कहा है, दर्शन का अर्थ संसार को देखना भर ही नहीं बल्कि उसमें स्थित सत्य-असत्य पर विचार करना भी है।

(ताल-भजनी) कह खां

स्थायी

1	2	3	4
×			प प
			उ ड़
सां	-	सां	नि
जा	-ये	गा	ऽ
-	-	-	प प
ऽ	ऽ	ऽ	उ ड़
सां	-	रें सां	निध
जा	ये	गाऽ	ऽऽ
-	-	-	-
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
-	पध	-प	ग
	हंऽस	ऽस	अ
म	प	ऽ	प प
के	ला	ऽ	ज ग
नि-	ध-	धनि	नि
दर	शन	काऽ	ऽ
प	ध	प	
मे	ला	ऽ	
×		0	

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

अन्तरा

1	2	3	4
	प नि	ध	नि
	जै ऽ	से	ऽ
प	-	ध प	म
पा	ऽ	त ऽ	गि
प	-	ध	प
रे	ऽ	त	रू
नि	ध	प	-
व	र	के	ऽ
	पध	-ध	-ध
	मिल	ऽ ना	ऽ
	ध सां	-सां	-सां
	ब हु	त	दु
सांरें	गं रे	सां	-
हेऽ	ऽऽ	ला	ऽ
(सां)ध	-	(सां)ध	
ऽ	ऽ	ऽ	
	पनि	ध	ध
	नाऽ	जा	ऽ
धनि	पध	प	-
नूँऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
	पध	-ध	-ध
	किध	-र	ऽगि
(ध) नि(ध)नि	प	प	प
रेऽ	ऽ	गा	ऽ
	प	ध	सां
	ल	ग्या	प
-	सां	सां	सां
व	न	काऽ	ऽ
सांरें	गंरें	सा	-
रेऽ	ऽ ऽ	ला	-
-	-	-	प प
			उड़
सां	-	सां	ध
जा	-ये	गा	ऽ
X		0	

बाकी सभी अन्तरों की स्वरलिपि एक समान है। इस भजन को पंडित कुमार गंधर्व जी द्वारा भजनी ताल में स्वर-ताल लिपिबद्ध किया गया है-

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

सुनता है गुरु ज्ञानी

स्थायी

सुनता है गुरु ज्ञानी गगन में
आवाज हो रही झिनी झिनी

अन्तरा

पाहि ले आए नाद, बिंदु से, पीछे जमया पानी हो जी
सब घट पूरण पूर रहना है, अलख पुरुष निर्बानी हो जी।

वहाँ से आया पता लिखाया, तृष्णा तौने बुझाई
अमृत छोड़ सो विष को धावे, उलटी फाँस फंसानी हो जी।

गंगन मंडल में गौ भी आनी, भौइ पे दही जमाया
माखन माखन संतो ने खाया, छाछ जगत बपरानी हो जी।

ओऽह सोऽहं बाजा बाजे, त्रिकुटी धाम सुहानी रे
इंगला पिंगला सुखमन नारी, सुनत भजन पहरानी हो जी।

कह कबीरा सुनो भई साधो, जानी अगम की बानी रे...
दिन भर रे जो नजर भर देखे, अजर अमर वो निशानी हो जी....।

व्याख्या: कबीर जी द्वारा रचित भजन में आकाश की तुलना शून्यता या शांति से की गई है, मानव मस्तिष्क को गगन कहा गया है, कबीर जी कहते हैं, ब्रह्माण्ड की वह दिव्य ध्वनि जो हर सच्चा गुरु और ज्ञानी है।

स्थायी

1	2	3	4
X			
ग	म ग	ग^{रे}-	-
सुन	ताऽ	है	ऽ
रे सा	सा	साध	ध
गुरु	ज्ञा	नीऽ	ऽ
ध़ सा	ध़ रे	रे	सा
ज्ञाऽ	ऽऽ	ऽ	नी
सा	सा	-	-
ज्ञा	ऽ	नी	ऽ

ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

1	2	3	4
	सा ग	-ग	ग
	ग ग	न में	आ
म ध	-प	प ध	प
वा	ऽज	हो	र
प प ग	-	-	$^{\text{प}}$ध
ही	ऽ	ऽ	झी
-	$^{\text{म}}$पा	-	म ग
ऽ	नी	ऽ	झी नी
रे सा	-	सा	-
झीऽ	ऽ	नी	ऽ
रे	-	-	सा
झी	ऽ	ऽ	नी
X		0	

अन्तरा

	ग ग	रे	सा
	प हि	ले	ऽ
सां	-	सां	-
आ	ऽ	ए	ऽ
	सा ग	ग	म
	ना द	बिं	दु
	सा ग	ग	म
	ना द	बि	दु
पध	पध	ध	ध
सेऽ	ऽऽ	पी	छे
-	ध्र	ध्र प	प
	ज	म या	ऽ
पध	$^{\text{ध}}$प	प य	मग
पा	ऽ	नी	ऽ
म प	प ध्र प	प	-
पाऽ	ऽ ऽ ऽ	नी	ऽ
प	-	प	-
हो	ऽ	जी	ऽ
	ध	ध	ध
	सब	घ	ट
ध	-	ध	ध
पू	ऽ	र	न
-	प	ध-	प
ऽ	पू	ऽर	र
प य	ग म	म	म

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

ह्या	ऽ ऽ	है	ऽ
X		0	
1	2	3	4
	ग	रे-	सा
	अ	ल ख	पु
ग	-	ग	म
रू	ष	नि	र
प ध	धप	-	प
बाऽ	ऽ	ऽ	नि
ग रे	सा	-	नि़ रे
होऽ	ऽ	ऽ	नि र
रे	-	-	सा
बा	ऽ	ऽ	नि
सा ध	ध	-	ध रे
होऽ	ऽ	ऽ	निर
रे	-	सा	-
बा	ऽ	नी	ऽ

अंगिम अतरों की स्वरलिपि भी ठीक पूर्व अन्तरों के समान है।

इस भजन को पंडित कुमार गंधर्व जी ने भैरव अंग का प्रयोग करके भजनी ताल में स्वर ताल लिपि बद्ध किया है। जो कि कहरवा का ही एक प्रकार है, जिसके बोल इस प्रकार है धा तिंन ना गे धिन

उपसंहार

कुमार जी की गायन शैली अपना एक निजी व्यक्तित्व रखती थी। वे किसी भी घराने में बंधकर नहीं चले उन्होंने विभिन्न घरानों के सारतत्व् लेकर, कई घरानों की गायकी को एक साँचे में ढ़ालकर एक रस बना लिया जिससे उन्होने विशिष्ट शैली का निर्माण किया। प्रचलित राग स्वरूपों की नवीनता के साथ प्रस्तुत करना हों या फिर निर्गुण भजनों को शास्त्रीय रूप प्रदान करना हो, अपना सम्पूर्ण सृजन कार्य एक नई खुशबू व ताजगी से ओत-प्रोत है कुमार जी एक ओर जो रव्याल गायन में निपुण तो थे ही उसके साथ-साथ लोकसंगीत, टप्पा भजन इत्यादि में भी उतने ही सिद्धहस्त थे। कुमार जी ने लोकसंगीत की धुनों का प्रयोग करके एक नए ही प्रकार की भजन शैली का निर्माण किया। संत कबीर जी के लिखे भजन और पदों के साथ अपने संगीत का मिश्रण करके भजन गायकी को एक नया आयाम दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कोमकाली, कलापिनी. कालजयी कुमार गंधर्व. मुम्बई: राजहंस प्रकाशन, 2014.
2. पोतदार, वसंत. कुमार गंधर्व. दिल्ली : मेधा बुक्स, 2001
3. कुमारी, संतोष. सौम्य संत गुरु रविदास. चण्डी गढ़: पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़, 2004.
4. अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल: संगीत कला विहार : मुम्बई, 2011.
5. मौद्गलय, विनयचंद्र. संगीत के कबीर कुमार गंधर्व